

लोकोक्तियाँ

- 1 . अपना रख , पराया चख : अपना बचाकर दूसरों का माल हड़प करना
- 2 . अपनी करनी पार उतरनी : स्वयं का परिश्रम ही काम आता है ।
- 3 . अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता : अकेला व्यक्ति शक्ति हीन होता है ।
- 4 . अधजल गगरी छलकत जाय : ओछा आदमी अधिक इतराता है ।
- 5 . अंधों में काना राजा : मूर्खों में कम ज्ञान वाला भी आदर पाता है ।
- 6 . अंधे के हाथ बटेर लगना : अयोग्य व्यक्ति को बिना परिश्रम संयोग से अच्छी वस्तु मिलना ।
- 7 . अंधा पीसे कुत्ता खाय : मूर्खों की मेहनत का लाभ अन्य उठाते हैं /असावधानी से अयोग्य को लाभ ।
- 8 . अब पछताये होत क्या , जब चिड़िया चुग गई खेत : अवसर निकल जाने पर पछताने से कोई लाभ नहीं ।
- 9 . अन्धे के आगे रोवै अपने नैना खोवै : निर्दय व्यक्ति या अयोग्य व्यक्ति से सहानुभूति की अपेक्षा करना व्यर्थ है ।

- 10 . अपनी गली में कुत्ता भी शेर बन जाता है । : अपने क्षेत्र में कमजोर भी बलवान होता है ।
- 11 . अन्धेर नगरी चौपट राजा : प्रशासन की अयोग्यता से सर्वत्र अराजकता आ जाना ।
- 12 . अन्धा क्या चाहे दो आँखें : बिना प्रयास वांछित वस्तु का मिल जाना ।
- 13 . अक्ल बड़ी या भैंस : शारीरिक बल से बुद्धिबल श्रेष्ठ होता है ।
- 14 . अपना हाथ जगन्नाथ : अपना काम अपने ही हाथों ठीक रहता है ।
- 15 . अपनी - अपनी डपली अपना - अपना राग : तालमेल का अभाव / सबका अलग - अलग मत होना / एकमत का अभाव ।
- 16 . अंधा बाँटे रेवड़ी फिर - फिर अपनी को देय : स्वार्थी व्यक्ति अधिकार पाकर अपने लोगों की सहायता करता है ।
- 17 . अंत भला तो सब भला : कार्य का अन्तिम चरण ही महत्त्वपूर्ण होता है ।
- 18 . आ बैल मुझे मार : जानबूझ कर मुसीबत में फँसना
- 19 . आम के आम गुठली के दाम : हर प्रकार का लाभ / एक काम से दो लाभ
- 20 . आँख का अंधा नाम नयन सुख: गुणों के विपरीत नाम होना ।
- 21 . आगे कुआँ पीछे खाई : दोनों / सब ओर से विपत्ति में फँसना
- 22 . आप भला जग भला : अपने अच्छे व्यवहार से सब जगह आदर मिलता है ।

- 23 . आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास : उद्देश्य से भटक जाना / श्रेष्ठ काम करने की बजाय तुच्छ कार्य करना / कार्य विशेष की उपेक्षा कर किसी अन्य कार्य में लग जाना ।
- 24 . आधा तीतर आधा बटेर : अनमेल मिश्रण / बेमेल चीजें जिनमें सामंजस्य का अभाव हो ।
- 25 . इन तिलों में तेल नहीं : किसी लाभ की आशा न होना ।
- 27 . आठ कनौजिए नौ चूल्हे : फूट होना ।
- 28 . उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे : अपना अपराध न मानना और पूछने वाले को ही दोषी ठहराना ।
- 29 . उल्टे बाँस बरेली को : विपरीत कार्य या आचरण करना
- 30 . ऊधो का न लेना , न माधो का देना : किसी से कोई मतलब न रखना / सबसे अलग ।
- 31 . ऊँची दुकान फीका पकवान : वास्तविकता से अधिक दिखावा / दिखावा ही दिखावा / केवल बाहरी दिखावा ।
- 32 . ऊँट के मुँह में जीरा : आवश्यकता की नगण्य पूर्ति
- 33 . ऊखली में सिर दिया तो मूसल का क्या डर : जब दृढ़ निश्चय कर लिया तो बाधाओं से क्या घबराना ।
- 34 . ऊँट किस करवट बैठता है : परिणाम में अनिश्चितता होना ।

- 35 . एक पंथ दो काज : एक काम से दोहरा लाभ / एक तरकीब से दो कार्य करना / एक साधन से दो कार्य करना ।
- 36 . एक अनार सौ बीमार : वस्तु कम , चाहने वाले अधिक एक स्थान के लिये सैकड़ों प्रत्याशी
- 37 . एक मछली सारा तालाब गंदा कर देती है : एक की बुराई से साथी भी बदनाम होते हैं ।
- 38 . एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकती : दो प्रशासक एक ही जगह एक साथ शासन नहीं कर सकते ।
- 39 . एक हाथ से ताली नहीं बजती : लड़ाई का कारण दोनों पक्ष होते हैं ।
- 40 . एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा । : बुरे से और अधिक बुरा होना / एक बुराई के साथ दूसरी बुराई का जुड़ जाना ।
- 41 . कागज की नाव नहीं चलती : बेइमानी से किसी कार्य में सफलता नहीं मिलती ।
- 42 . काला अक्षर भैंस बराबर : बिल्कुल निरक्षर होना ।
- 43 . कंगाली में आटा गीला : संकट पर संकट आना ।
- 44 . कोयले की दलाली में हाथ काले । : बुरे काम का परिणाम भी बुरा होता है / दुष्टों की संगति से कलंकित होते हैं ।
- 45 . का वर्षा जब कृषि सुखानी : अवसर बीत जाने पर साधन की प्राप्ति बेकार है ।

- 46 . कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमति ने कुनबा जोड़ा : अलग - अलग स्वभाव वालों को एक जगह एकत्र करना / इधर - उधर से सामग्री जुटा कर कोई निकृष्ट वस्तु का निर्माण करना ।
- 47 . कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी नाव पर : एक - दूसरे के काम आना परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं ।
- 48 . काबुल में क्या गधे नहीं होते : मूर्ख सब जगह मिलते हैं ।
- 49 . कहने पर कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता : कहने से जिद्दी व्यक्ति काम नहीं करता ।
- 50 . कोउ नृप होउ हमें का हानि : अपने काम से मतलब रखना ।
- 51 . कौवा चला हंस की चाल भूल गया अपनी भी चाल : दूसरों के अनधिकार अनुकरण से अपने रीति रिवाज भूल जाना ।
- 52 . कभी घी घना तो कभी मुट्ठी चना : परिस्थितियाँ सदा एक सी नहीं रहतीं ।
- 53 . करले सो काम भजले सो राम : एक निष्ठ होकर कर्म और भक्ति करना
- 54 . काज परै कछ और काज सरै कछु और : दुनिया बड़ी स्वार्थी है काम निकाल कर मुँह फेर लेते हैं ।
- 55 . खोदा पहाड़ निकली चुहिया : अधिक परिश्रम से कम लाभ होना
- 56 . खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है । : स्पर्धावश काम करना / साथी को देखकर दूसरा साथी भी वैसा ही व्यवहार करता है ।

- 57 . खग जाने खग हीं की : मूर्ख व्यक्ति मूर्ख की बात भाषा समझता है ।
- 58 . खिसियानी बिल्ली खम्भा नोंचे : शक्तिशाली पर वश न चलने के कारण कमजोर पर क्रोध करना
- 59 . गागर में सागर भरना : थोड़े में बहुत कुछ कह देना
- 60 . गुरु तो गुड़ रहे चले शक्कर हो गये : चले का गुरु से अधिक ज्ञानवान होना
- 61 . गवाह चुस्त मुद्ई सुस्त : स्वयं की अपेक्षा दूसरों का उसके लिए अधिक प्रयत्नशील होना
- 62 . गुड़ खाए और गुलगुलों से परहेज : झूठा ढोंग रचना ।
- 63 . गाँव का जोगी जोगना , आन गाँव का सिद्ध : अपने स्थान पर सम्मान नहीं होता
- 64 . गरीब तेरे तीन नाम - झूठा , पापी , बेईमान । : गरीब पर ही सदैव दोष मढ़े जाते हैं / निर्धनता सदैव अपमानित होती है ।
- 65 . गुड़ दिये मरे तो जहर क्यों दे : प्रेम से कार्य हो जाये तो फिर दण्ड क्यों ।
- 66 . गंगा गये गंगादास यमुना गये यमुनादास : अवसरवादी होना ।
- 67 . गोद में छोरा शहर में ढिंढोरा : पास की वस्तु को दूर खोजना
- 68 . गरजते बादल बरसते नहीं : कहने वाले (शोर मचाने वाले) कुछ करते नहीं
- 69 . गुरु कीजै जान , पानी पीवै छान : अच्छी तरह समझ बूझकर काम करना

- 70 . घर - घर मिट्टी के चूल्हे हैं : सबकी एक सी स्थिति का होना सभी समान रूप से खोखले हैं ।
- 71 . घोड़ा घास से दोस्ती करे तो क्या खाये ? : मजदूरी लेने में संकोच कैसा
- 72 . घर का भेदी लंका ढाहे : घरेलू शत्रु प्रबल होता है ।
- 73 . घर की मुर्गी दाल बराबर : अधिक परिचय से सम्मान कम / घरेलू साधनों का मूल्यहीन होना ।
- 74 . घर बैठे गंगा आना : बिना प्रयत्न के लाभ , सफलता मिलना
- 75 . घर में नहीं दाने बुढिया चली भुनाने : झूठा दिखावा करना
- 76 . घर आये नाग न पूजै , बाँबी पूजन जाय : अवसर का लाभ न उठाकर उसको खोज में जाना
- 77 . घर का जोगी जोगना ,आन गाँव का सिद्ध : विद्वान को अपने घर की अपेक्षा बाहर अधिक सन्मान / परिचित की अपेक्षा अपरिचित का विशेष आदर
- 78 . चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाए : बहुत कजूस होना ।
- 79 चलती का नाम गाड़ी : काम का चलते रहना / बनी बात के सब साथ होते हैं
- 80 चंदन की चुटकी भली गाड़ी : अच्छी वस्तु तो थोड़ी भी भली ।
- 81 . चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात : सुख का समय थोड़ा ही होता है ।

- 82 चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता : निर्लज्ज पर किसी बात का असर नहीं होता ।
- 83 . चिराग तले अंधेरा : दूसरों को उपदेश देना स्वयं अज्ञान में रहना
- 84 चींटी के पर निकलना : बुरा समय आने से पूर्व बुद्धि का नष्ट होना
- 85 . चील के घोंसले में माँस कहाँ ? : भूखे के घर भोजन मिलना असंभव होता है ।
- 86 . चुपड़ी और दो - दो : लाभ में लाभ होना
- 87 . चोरी का माल मोरी में : बुरी कमाई बुरे कार्यों में नष्ट होती है ।
- 88 . चोर की दाढ़ी में तिनका : अपराधी का सशंकित होना / अपराधी के कार्यों से दोष प्रकट हो जाता है ।
- 89 . चोर - चोर मौसेरे भाई : दुष्ट लोग प्रायः एक जैसे होते हैं एक से स्वभाव वाले लोगों में मित्रता होना
- 90 . छछुदर के सिर में चमेली का तेल : अयोग्य व्यक्ति के पास अच्छी वस्तु होना
- 91 . छोटे मुँह बड़ी बात : हैसियत से अधिक बातें करना
- 92 . जहाँ काम आवै सुई का करै तरवारि : छोटी वस्तु से जहाँ काम निकलता है यहाँ बड़ी वस्तु का उपयोग नहीं होता है ।
- 93 . जल में रहकर मगर से बैर : बड़े आश्रयदाता से दुश्मनी ठीक नहीं ।
- 94 . जब तक सॉस तब तक आस : जीवन पर्यन्त आशान्वित रहना ।

- 95 . जंगल में मोर नाचा किसने देखा : दूसरों के सामने उपस्थित होने पर ही गुणों की कद्र होती है / गुणों का प्रदर्शन उपयुक्त स्थान पर
- 96 . जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी : मातृभूमि का महत्व स्वर्ग से भी बढ़कर है ।
- 97 . जहाँ मुर्गा नहीं बोलता वहाँ क्या सवेरा नहीं होता । : किसी के बिना कोई काम नहीं रुकता कोई अपरिहार्य नहीं है ।
- 98 . जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि : कवि दूर की बात सोचता है । / सीमातीत कल्पना करना |
- 99 . जाके पैर न फटी बिवाई , सो क्या जाने पीर पराई :जिसने कभी दुःख नहीं देखा वह दूसरों का दुख क्या अनुभव करे
- 100 . जाकी रही भावना जैसी , हरि मूरत देखी तिन तैसी : भावनानुकूल (प्राप्ति का होना) औरों को देखना
- 101 . जान बची और लाखों पाये : प्राण सबसे प्रिय होते हैं ।
- 102 . जाको राखे साइयाँ मारि सके न कोय : ईश्वर रक्षक हो तो फिर डर किसका , कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता ।
- 103 . जिस थाली में खाये उसी में छेद करना : विश्वासघात करना / भलाई करने वाले का ही बुरा करना / कृतघ्न होना |
- 104 . जिसकी लाठी उसकी भैंस : शक्तिशाली की विजय होती है ।

- 105 . जिन खोजा तिन पाइयों गहरे पानी पैठ : प्रयत्न करने वाले को सफलता / लाभ
अवश्य मिलता है ।
- 106 . जो ताको कौंटा बुवै ताहि बोंय तू फूल : अपना बुरा करने वालों के साथ भी भलाई
का व्यवहार करो
- 107 . जादू वही जो सिर चढ़कर बोले: उपाय वही अच्छा जो कारगर हो
- 108 . झटपट की घानी आधा तेल आधा पानी : जल्दबाजी का काम खराब ही होता है ।
- 109 . झूठ कहे सो लड्डू खाय साँच कहे सो मारा जाय : आजकल झूठे का बोल बाला है ।
- 110 . जैसी बहे बयार पीठ तब वैसी दीजै : समयानुसार कार्य करना ।
- 111 . टके का सौदा नौ टका विदाई : साधारण वस्तु हेतु खर्च अधिक
- 112 . टेढ़ी उँगली किये बिना घी नहीं निकलता : सीधेपन से काम नहीं (चलता) निकलता
।
- 113 . टके की हाँडी गई पर कुत्ते की जात पहचान ली : थोड़ा नुकसान उठाकर धोखेबाज को
पहचानना ।
- 114 . डूबते को तिनके का सहारा : संकट में थोड़ी सहायता भी लाभप्रद / पर्याप्त होती है ।
- 115 . ढाक के तीन पात : सदा एक सी स्थिति बने रहना
- 116 . ढोल में पोल : बड़े - बड़े भी अन्धे करतें हैं ।

- 117 . तीन लोक से मथुरा न्यारी : सबसे अलग विचार बनाये रखना
- 118 . तीर नहीं तो तुक्का ही सहीं : पूरा नहीं तो जो कुछ मिल जाये उसी में संतोष करना ।
- 119 . तू डाल - डाल मैं पात - पात : चालाक से चालाकी से पेश आना / एक से बढ़कर एक चालाक होना
- 120 . तेल देखो तेल की धार देखो : नया अनुभव करना धैर्य के साथ सोच समझ कर कार्य करो परिणाम की प्रतीक्षा करो ।
- 121 . तेली का तेल जले मशालची का दिल जले । : खर्च कोई करे बुरा किसी और को ही लगे ।
- 122 . तेते पाँव पसारिये जेती लाम्बी सौर : हैसियतानुसार खर्च करना / अपने सामर्थ्य के अनुसार ही कार्य करना
- 123 . तन पर नहीं लत्ता पान खाये अलबत्ता : अभावग्रस्त होने पर भी ठाठ से रहना / झूठा दिखावा करना ।
- 124 . तीन बुलाए तेरह आये : अनिमन्त्रित व्यक्ति का आना ।
- 125 . तीन कनौजिये तेरह चूल्हे : व्यर्थ की नुक्ताचीनी करना / ढोंग करना ।
- 126 . थोथा चना बाजे घना : गुणहीन व्यक्ति अधिक डींगें मारता है / आडम्बर करता है ।
- 127 . दूध का दूध पानी का पानी : सही सही न्याय करना ।
- 128 . दमडी की हॉडी भी ठोक बजाकर लेते हैं : छोटी चीज को भी देखभाल कर लेते हैं ।

- 129 . दान की बछिया के दाँत नहीं गिने जाते : मुफ्त की वस्तु के गुण नहीं देखे जाते ।
- 130 . दाल भात में मूसल चंद : किसी के कार्य में व्यर्थ में दखल देना ।
- 131 . दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम : सदेह की स्थिति में कुछ भी हाथ नहीं लगना ।
- 132 . दूध का जला छाछ को फूंक फूंक कर पीता है : एक बार धोखा खाया व्यक्ति दुबारा सावधानी बरतता है ।
- 133 . दूर के ढोल सुहाने लगते हैं : दूरवर्ती वस्तुएँ अच्छी मालूम होती हैं दूर से ही वस्तु का अच्छा लगना पास आने पर वास्तविकता का पता लगना ।
- 134 . दैव दैव आलसी पुकारा : आलसी व्यक्ति भाग्यवादी होता है ।
- 135 . धोबी का कुत्ता घर का न घाट का : किधर का भी न रहना न इधर का न उधर का
- 136 . न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी : ऐसी अनहोनी शर्त रखना जो पूरी न हो सके / बहाने बनाना ।
- 137 . न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी : झगड़े को जड़ से ही नष्ट करना
- 138 . नक्कार खाने में तूती की आवाज : अराजकता में सुनवाई न होना बड़ों के समक्ष छोटों की कोई पूछ नहीं ।
- 139 . न सावन सूखा न भादों हरा : सदैव एक सी तंग हालत रहना
- 140 . नाच न जाने आँगन टेढ़ा : अपना दोष दूसरों पर मढ़ना / अपनी अयोग्यता को छिपाने हेतु दूसरों में दोष ढूँढना ।

- 141 . नाम बड़े और दर्शन छोटे : बड़ों में बड़प्पन न होना गुण कम किन्तु प्रशंसा अधिक ।
- 142 . नीम हकीम खतरे जान , नीम मुल्ला खतरे ईमान : अध कचरे ज्ञान वाला अनुभवहीन व्यक्ति अधिक हानिकारक होता है ।
- 143 . नेकी और पूछ - पूछ : भलाई करने में भला पूछना क्या ?
- 144 . नेकी कर कुए में डाल : मलाई कर भूल जाना चाहिये ।
- 145 . नौ नगद , न तेरह उधार : भविष्य की बड़ी आशा से तत्काल का थोड़ा लाभ अच्छा / व्यापार में उधार की अपेक्षा नगद को महत्व देना ।
- 146 . नौ दिन चले अढ़ाई कोस : बहुत धीमी गति से कार्य का होना
- 147 . नौ सौ चूहे खाय बिल्ली हज को चली : बहुत पाप करके पश्चाताप करने का ढोंग करना ।
- 148 . पढ़े पर गुने नहीं : अनुभवहीन होना ।
- 149 . पढे फारसी वेचे तेल , देखो यह विधान का खेल : शिक्षित होते हुए भी दुर्भाग्य से निम्न कार्य करना ।
- 150 . पराधीन सपनेह सुख नाही : परतंत्र व्यक्ति कभी सुखी नहीं होता ।
- 151 . पाँचों उंगलियाँ बराबर नहीं होती : सभी समान नहीं हो सकते ।
- 152 . प्रभुता पाय काहि मद नाही : अधिकार प्राप्ति पर किसे गर्व नहीं होता ।

- 153 . पानी में रहकर मगर से वैर : शक्तिशाली आश्रयदाता से वैर करना ।
- 154 . प्यादे से फरजी भयो टेढो - टेढो जाय : छोटा आदमी बड़े पद पर पहुंचकर इतराकर चलता है ।
- 155 . फटा मन और फटा दूध फिर नहीं मिलता : एक बार मतभेद होने पर पुनः मेल नहीं हो सकता ।
- 156 . बारह बरस में घूरे के दिन भी फिरते हैं । : कभी न कभी सबका भाग्योदय होता है ।
- 157 . बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद : मुख को गुण की परख न होना / अज्ञानी किसी के महत्त्व को आंक नहीं सकता ।
- 158 . बद अच्छा , बदनाम बुरा : कलंकित होना बुरा होने से भी बुरा है ।
- 159 . बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी : जब संकट आना ही है तो उससे कब तक बचा जा सकता है ।
- 160 . बावन तोले पाव रत्ती : बिल्कुल ठीक या सही सही होना ।
- 161 . बाप न मारी मेंढकी बेटा तीरंदाज: बहुत अधिक बातूनी या गप्पी होना
- 162 . बाँबी में हाथ तू डाल मंत्र मैं पढ़ूं : खतरे का कार्य दूसरों को सौंपकर स्वयं अलग रहना ।
- 162 . बाप बड़ा न भैया , सबसे बड़ा रुपया : आजकल पैसा ही सब कुछ है ।

163 . बिल्ली के भाग छींका टूटना : संयोग से किसी कार्य का अच्छा होना / अनायास अप्रत्याशित वस्तु की प्राप्ति होना ।

164 . बिन मगे मोती मिले मांगे मिले न भीख : भाग्य से स्वतः मिलता है इच्छा से नहीं ।

165 . बिना रोए माँ भी दूध नहीं पिलाती : प्रयत्न के बिना कोई कार्य नहीं होता ।

166 . बैठे से बेगार भली : खाली बैठे रहने से तो किसी का कुछ काम करना अच्छा ।

167 . बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाए : बुरे कर्म कर अच्छे फल की इच्छा करना व्यर्थ है ।

168 . भई गति साँप छछंदर जैसी : दुविधा में पड़ना । 169 . भूल गये राग रंग भूल गये छकड़ी तीन चीज याद रही नोन , तेल , लकड़ी : गृहस्थी के जंजाल में फंसना

170 . भूखे भजन न होय गोपाला : भूख लगने पर कुछ भी अच्छा नहीं लगता ।

171 . भागते भूत की लंगोट भली : हाथ पड़े सोई लेना जो बच जाए उसी से संतुष्टि / कुछ नहीं से जो कुछ भी मिल जाए वह अच्छा ।

172 . भैंस के आगे बीन बजाये भैंस खड़ी पगुराय : मूर्ख को उपदेश देना व्यर्थ है ।

173 . बिच्छू का मंत्र न जाने साँप के बिल में हाथ डाले : योग्यता के अभाव में उलझनदार काम करने का बीड़ा उठा लेना ।

174 . मन चंगा तो कटौती में गंगा : मन पवित्र तो घर में तीर्थ है ।

175 . मरता क्या न करता : मुसीबत में गलत कार्य करने को भी तैयार होना पड़ता है ।

- 176 . मानो तो देव नहीं तो पत्थर : विश्वास फलदायक होता है ।
- 177 . मान न मान मैं तैरा मेहमान : जबरदस्ती गले पड़ना ।
- 178 . मार के आगे भूत भागता है : दण्ड से सभी भयभीत होते हैं ।
- 179 . मियाँ बीबी राजी तो क्या करेगा काजी ? : यदि आपस में प्रेम है तो तीसरा क्या कर सकता है ?
- 180 . मुख में राम बगल में छुरी : ऊपर से मित्रता अन्दर शत्रुता धोखेबाजी करना ।
- 181 . मेरी बिल्ली मुझ से ही म्याऊँ : आश्रयदाता का ही विरोध करना
- 182 . मेंढ़की को जुकाम होना : नीच आदमियों द्वारा नखरे करना ।
- 183 . मन के हारे हार है मन के जीते जीत : साहस बनाये रखना आवश्यक है / हतोत्साहित होने पर असफलता व उत्साहपूर्वक कार्य करने से जीत होती है ।
- 184 . यथा राजा तथा प्रजा : जैसा स्वामी वैसा सेवक
- 185 : यथा नाम तथा गुण : नाम के अनुसार गुण का होना ।
- 186 . यह मुँह और मसूर की दाल : योग्यता से अधिक पाने की इच्छाकरना
- 187 . मुफ्त का चंदन , घिस मेरे नंदन: मुफ्त में मिली वस्तु का दुरुपयोग करना ।
- 188 . रस्सी जल गई पर ऐंठ न गई : सर्वनाश होने पर भी घमण्ड बने रहना / टेक न छोड़ना ।

- 189 . रंग में भंग पड़ना : आनन्द में बाधा उत्पन्न होना ।
- 190 . राम नाम जपना , पराया माल अपना : मक्कारी करना ।
- 191 . रोग का घर खाँसी , झगड़े का घर हाँसी : हाँसी मजाक झगड़े का कारण बन जाती हैं ।
- 192 . रोज कुआ खोदना रोज पानी पीना : प्रतिदिन कमाकर खाना रोज कमाना रोज खा जाना ।
- 193 . लकड़ी के बल बन्दरी नाचे : भयवश ही कार्य संभव है ।
- 194 . लम्बा टीका मधुरी बानी दगेबाजी की यही निशानी : पाखण्डी हमेशा दगाबाज होते हैं ।
- 195 . लातों के भूत बातों से नहीं मानते : नीच व्यक्ति दण्ड से / भय से कार्य करते हैं कहने से नहीं ।
- 196 . लोहे को लोहा ही काटता है : बुराई को बुराई से ही जीता जाता है ।
- 197 . वक्त पड़े जब जानिये को बैरी को मीत : विपत्ति / अवसर पर ही शत्रु व मित्र की पहचान होती है ।
- 198 . विधिकर लिखा को मेटनहारा : भाग्य को कोई बदल नहीं सकता ।
- 199 . विनाश काले विपरीत बुद्धि : विपत्ति आने पर बुद्धि भी नष्ट हो जाती है ।
- 200 . शबरी के बेर : प्रेममय तुच्छ भेंट

- 201 . शक्कर खोर को शक्कर मिल ही जाती हैं : जरूरतमंद को उसकी वस्तु सुलभ हो ही जाती है ।
- 202 . शुभस्य शीघ्रम : शुभ कार्य में शीघ्रता करनी चाहिए ।
- 203 . शठे शाठ्यं समाचरेत : दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार करना चाहिये ।
- 204 . सांच को आँच नहीं : सच्चा व्यक्ति कभी डरता नहीं ।
- 205 . सब धान बाईस पंसेरी : अविवेकी लोगों की दृष्टि में गुणी और मूर्ख सभी व्यक्ति बराबर होते हैं ।
- 206 . सब दिन होत न एक समान : जीवन में सुख - दुःख आते रहते हैं , क्योंकि समय परिवर्तनशील होता है ।
- 207 . सैइयाँ भये कोतवाल अब काहे का डर : अपनों के उच्चपद पर होने से बुरे कार्य बेहिचक करना ।
- 208 . समरथ को नहीं दोष गुसाई : गलती होने पर भी सामर्थ्यवान को कोई कुछ नहीं कहता ।
- 209 . सावन सूखा न भादों हरा : सदैव एक सी स्थिति बने रहना ।
- 210 . साँप मर जाये और लाठी न टूटे : सुविधापूर्वक कार्य होना / बिना हानि के कार्य का बन जाना ।
- 211 . सावन के अंधे को हरा ही हरा सूझता है : अपने समान सभी को समझना ।

212 . सीधी अँगुली से घी नहीं निकलता: सीधेपन से कोई कार्य नहीं होता

213 सिर मुंडाते ही ओले पड़ना : कार्य प्रारम्भ करते ही बाधा उत्पन्न होना ।

214 सोने में सुगन्ध : अच्छे में और अच्छा ।

215 . सौ सुनार की एक लुहार की : सैकड़ों छोटे उपायों से एक बड़ा उपाय अच्छा ।

216 सूप बोले तो बोले छलनी भी : दोषी का बोलना ठीक नहीं

217 . हथेली पर दही नहीं जमता : हर कार्य के होने में समय लगता है ।

218 . हथेली पर सरसों नहीं उगती : कार्य के अनुसार समय भी लगता है ।

219 . हल्दी लगे न फिटकरी रंग : आसानी से काम बन जाना / कम खर्च में अच्छा कार्य ।

220 . हाथ कंगन को आरसी क्या : प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता क्या ?

221 . हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और : कपटपूर्ण व्यवहार / कहे कुछ करे कुछ / कथनी व करनी में अन्तर ।

222 . होनहार बिरवान के होत चीकने पात : महान व्यक्तियों के लक्षण बचपन में ही नजर आ जाते हैं ।

223 . हाथ सुमरिनी बगल कतरनी : कपटपूर्ण व्यवहार करना ।

नोट : यह पीडीऍफ़ विभिन्न स्रोतों से तथ्य एकत्रित कर बनायीं गयी है | यदि इसमें कोई त्रुटी पायी जाती है तो नॉलेज हब संचालक की जिम्मेदारी नहीं होगी |



Join Telegram Channel

Like Facebook Page

WWW.KNOWLEDGEKAHUB.COM

